आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 12-10-14

समय से पहले अपने को ब्रह्मा बाप समान, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने का पुरुषार्थ है लगावमुक्त बेहद की वैराग्य वृति और इसके लिए सहज साधन है - सदा स्नेह के सागर में समा जाओ.

बापदादा कहते है सब बच्चों का बापदादा से स्नेह तो बहुत है तो सिर्फ स्नेह में डूबे रहो, स्नेह के सागर से बहार नहीं निकलो. लेकिन बापदादा के स्नेह में सदा के लिए डूबे भी तब रह सकेंगे जब पुराना सब क़ुरबान किया हो और इसके लिए अभी समय प्रमाण सबको अपने में बेहद की वैराग्य वृति को इमर्ज करना ही होगा. बापदादा समझाते हैं कि इसमें बच्चों का समय शिक्षक नहीं बने, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है. समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो. आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो. समय आपकी रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ.

ब्रह्मा बाप को इसमें फोलो करो. ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा. आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा. तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है. बाबा के रथ को खिलाता हूँ. जैसे तन से बेहद का वैराग्य वैसे मन तो मनमनाभव ही था. धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प मात्र भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है. सारे धन को कन्याओं-माताओं को विल किया और कन्याओं-माताओं को जिम्मेवारी दे दी, धन में मेरापन नहीं रखा. समय, श्वास अपने प्रति नहीं, उसमें भी बेहद के वैरागी रहे. अपने प्रति कोई ऐक्सट्रा साधन उपयोग नहीं किया, सदा साधारण लाइफ में रहे. कोई स्पेशल चीज अपने कार्य में नहीं लगाई. वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे. बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं के लिए उपयोग नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे. इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृति प्रत्यक्ष जीवन में रही. अन्त में शरीर छोड़ते समय पर, बच्चे का हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृति.

ब्रह्मा बाप ने अन्त में भी सेकण्ड में उपराम वृति का, बेहद का वैराग्य का सबूत बनकर दिखाया. बापदादा भी सभी बच्चों से कहते है - अभी समय प्रमाण अपने में बेहद के वैराग्य वृति को इमर्ज करो. बिना बेहद के वैराग्य वृति के सारे विश्व को सकाश देने की सेवा हो नहीं सकती. ब्रह्मा बाप समान पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट लेना हो तो अपने में बेहद की वैराग्य वृति को इमर्ज करो.

बापदादा देखते है बच्चों में अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं. कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है. समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही हैं. मुक्त होना ही नहीं जानते. ऐसे अनेक प्रकार के लगाव बच्चों को बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं. चाहना है बने, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है. लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है. चाहना ज्यादा है, करना कम है. बापदादा चाहते है कि करना ही है - यह वैराग्य वृति सभी बच्चों में इमर्ज होनी चाहिए. समय तो करायेगा लेकिन फिर पास विद ऑनर नहीं बन सकते.

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं - उड़ जायें, उड़ जायें.... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो. मन से वैराग्य हो. बापदादा चाहते है सभी अपने सम्पूर्णता के दर्पण से अपने सूक्ष्म लगाव को चेक करें और उसे समाप्त करें. बापदादा से प्यार है ना तो प्यार में यह गिफ्ट दो.

ॐ शांति.